आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2566 • उदयपुर, सोमवार 03 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अंकित के जीवन में अंकित हुई खुशियाँ

उत्तरप्रदेश के शहर गोरखपुर निवासी अंकित भारती (17) 12वीं कक्षा के विद्यार्थी हैं। बचपन में छत से गिर पड़े थे। पांव में मामूली सी खरोंच थी। हालांकि दर्द रहता था। मालिश कर दर्द को कम करने की कोशिश करते थे। साल–डेढ़ साल पूर्व साईकिल चलाते गिर पड़े तो उसी पैर में चोट लगी जिस पर बचपन में गिरने से खरोंच आई थी। घर पर ही इलाज करते रहे लेकिन दर्द बढ़ता गया। माता–पिता प्रेमलता– रामानंद प्रसाद ने शहर के ही एक अस्पताल में जांच करवाई। जहां आठ दिन भर्ती रखा गया।

डॉक्टरों के अनुसार बचपन में लगी खरोंच का तत्काल सटीक उपाय न होने से उस जगह कैंसर से हड्डी गल गई। जिसका पांव काटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। बाराबंकी के एक अस्पताल में फिर दिखाया तो वहां भी पांव काटने की सलाह ही दी गई। बांया पैर कटवाना ही पड़ा। अक्टूबर माह में नारायण सेवा संस्थान में आने पर अंकित को निःशुल्क कृत्रिम पांव लगाया गया। जिससे वे अब आराम से चल लेते हैं। माता–पिता और दो बड़े भाई अंकित के कृत्रिम पांव लगने और चलता हुआ देखकर खुश हैं।

सुगम हुआ अनोखी का जीवन

व्यक्ति की जिन्दगी में जब सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा होता है और वह अपनी गृहस्थी को लेकर सपने बुनता है, अनायास कोई घटना उसके सपनों को छिन्न–भिन्न कर देती है। ऐसी स्थिति में जो निराश होकर भी हौसले से काम लेते हैं,उन्हें कोई न कोई सम्बल मिल ही जाता है। राजस्थान के धौलपुर जिले के मलक पाड़ा–बाड़ी गांव के विवेक गर्ग के साथ कुछ ऐसा ही हुआ कि उनकी गृहस्थी आंसूओं में डूब गई। उनके घर में जल्दी ही पहली संतान आने की खुशी थी। 18 सितम्बर, 2013 को घर में लक्ष्मी आने की जो खुशी मिली कुछ ही पलों बाद वह काफूर हो गई।

नवजात बच्ची का दायां पांव टखने की हड्डियों में विकृति के कारण मुड़ा हुआ, जबकि बाएं हाथ का पंजा भी अंगूठे और उंगलियों में विकृति लिए हुए था। बालिका का नाम अनोखी रखा गया। जब वह एक साल की हुई तो उसे गोदी में ही उठाकर इधर–उधर ले जाना पड़ता था। चार वर्ष की होने पर उसे स्कूल में दाखिल तो करवा दिया गया लेकिन गोदी में ही उसे लाना ले जाना पड़ता था। इस दौरान माता–पिता को मजदूरी और घर के कामों में परेशानी का सामना करना पड़ा। दो–तीन साल बाद घर में दूसरी बच्ची ने जन्म लिया, जो एकदम सामान्य थी। अनोखी को इलाज के लिए जयपुर भी ले जाया गया लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। इस बीच इन्हें इस तरह के दिव्यांग बच्चों के निःशुल्क इलाज के लिए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में सूचना मिली। सन् 2017 में चार वर्ष की अनोखी को लेकर माता–पिता नीतू–विवेक गर्ग उदयपुर आए। जहां डॉक्टरों ने परीक्षण कर उसके लिए विशेष कैलिपर बनाया। जिसके सहारे अनोखी अब थोड़ा चलती भी है और खुश है।

अब उम्र बढ़ने के साथ तीसरी में पढ़ने वाली 9 साल की अनोखी के लिए अक्टूम्बर, 2021 में कैलिपर बदला गया है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजानाद भवन, नई सड़क, ग्वालियर (म.प्र.) 7412060406

जैन मंदिर, जैनधर्मशाला, 56/62 चाहचन्द, जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयागराज, यूपी 9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से
मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर, इसामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

मुम्बई माता बाल संयोजन संस्था, महात्मा गांधी, विद्यालय के सामने, वाडा रोड, राजगुरु नगर, पुणे, महाराष्ट्र

समर्पण, अशोक विहार कॉलोनी, फेज-1, पहाड़िया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेंदुर्णी जलगांव, महाराष्ट्र

साय साक्षी संघ, एल आई जी. 9/3, प्लाट नं. स्टीम फेस, 4, के.पी.एस.बी. कॉलोनी, लेदा काम्पलेक्स के पास, कुटकपल्ली, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

धैर्य की असली परीक्षा

एक बार स्वामी विवेकानंद ट्रेन से सफर कर रहे थे। वे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठे हुए थे। उनके पास ही दो अंग्रेज और आकर बैठ गए। अंग्रेजों ने विवेकानंद को देखा तो सोचा कि एक साधु इस डिब्बे में कैसे बैठ सकता है। अंग्रेज सोच रहे थे कि ये साधु है, ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं होगा। हमारी भाषा भी नहीं जानता होगा। दोनों अंग्रेज अपनी भाषा में साधु–संतों की बुराई करने लगे। वे बोल रहे थे, ये जो लोग साधु बन जाते हैं, दूसरों के पैसों पर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में घूमते हैं, ये लोग धरती पर बोझ हैं। वे लगातार साधुओं की बुराई कर रहे थे, क्योंकि वे ये मान रहे थे कि ये साधु हमारी बात समझ नहीं पा रहा है, इसे इंग्लिश तो आती नहीं होगी। एक स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी तो वहां गार्ड आया तो विवेकानंदजी ने उस गार्ड से अंग्रेजी में कोई बात की। ये देखकर दोनों अंग्रेज हैरान थे, उन्हें लगा कि यह तो फर्राटेदार इंग्लिश बोल रहा है। उन्हें शर्मिंदगी होने लगी।

दोनों अंग्रेजों को ये मालूम हो गया कि ये स्वामी विवेकानंद हैं। दोनों ने स्वामीजी से क्षमा मांगी और पूछा, आप अंग्रेजी भाषा जानते हैं, हम लगातार आपकी बुराई कर रहे थे तो आपने हमें कुछ बोला नहीं। ऐसा क्यों? स्वामीजी ने कहा, आप जैसे लोगों के संपर्क में रहते हुए उनकी भाषा सुनते हुए, उनकी प्रतिक्रिया से मुझे बहुत फायदा होता है, मेरी सहनशक्ति और निखरती है। आपके अपने विचार हैं, आपने प्रकट कर दिए। मेरा अपना निर्णय है कि मुझे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। मैं आप पर गुस्सा करता तो नुकसान आपका नहीं, मेरा ही होता। जब कोई हमारी बुराई करता है, तब हमारे धैर्य की असली परीक्षा होती है। बुरी बातों को सहन करने की शक्ति हमें कई समस्याओं से बचा लेती है।

सहारा छोड़ खड़ी हुई जिंदगी

सहेन्द्र बिहार के रोहतास जिले का रहने वाला है और दाएं पैर से निःशक्त था। बचपन से उसकी विज्ञान विषय में बहुत रुचि थी और वह इंजीनियर बनना चाहता था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। हाई स्कूल पास करते ही उसके सिर से मां का साया उठ गया।

घर की स्थिति बहुत खराब हुई और सहेन्द्र का इंजीनियर बनने का सपना भी टूट गया लेकिन फिर भी उसने हालात के आगे घुटने नहीं टेके और विषम परिस्थितियों के बावजूद भी बीएससी नॉन मेडिकल कर लिया।

फिर उसे सहारा मिला नारायण सेवा संस्थान का जहां आकर उसके पांव का ऑपरेशन हो गया सहेंद्र चाहता है कि जिस तरह नारायण सेवा संस्थान लोगों में खुशियों की सौगात बांट रहा है, उसी तरह वह भी अपने जीवन में इस मुहिम को आगे बढ़ाएगा। वह खुद इंजीनियर नहीं बन पाया लेकिन किसी और के सपनों को साकार करने में जरूर सहयोगी बनेगा और जरूरतमंद छात्रों को निशुल्क कोचिंग करवाकर उनकी सहायता करेगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

जो राम भगवान जहर को अमृत बना सकते हैं। और गोपद सिंधु गाय के बराबर स्थान की जगह को समुद बना सकते हैं। उन रामजी की कृपा से सब काम वे। आपणे जय रामजी री करलां, जय श्रीकृष्ण करलां। जग में कर्म महान। कैकेयी री कथा नी चाली रीथी, व्यथा चाली री थी। कैकेयी बड़ी व्याकुल, बड़ी निराश, बड़ी दुःखी। निन्दा में आ गयी मंथरा के बहकावे में आ गई, अपना घर तोड़ने में आ गई। अपने मंथरा से सावधान रहना है। अपना घर नही टूटना चाहिये। अटूट बंधन रिश्तों के, ये रिश्ते अपन ने नही बनाये है, भगवान ने बनाये है।

माताजी पिताजी दादाजी दादीजी नानाजी नानीजी ये पोताजी पोतीजी बेटाजी बेटीजी भतीजा जी भाणजा जी मासीजी चाचीजी ताईजी ये रिश्ते मुआजी। ये रिश्ते भगवान ने बनाये। अपने को आशीर्वाद में कहा– बेटा रिश्तों को निभा लेना, कर्त्तव्य को निभा लेना। पण कैकेयी ने निभाया नहीं। कैकेयी ने तो बिगाड़ा काम। दशरथ जी अचेत होकर गिर पड़े। जैसे ही कहा कि– 'तापस वेश, विशेष उदासी।' चौदह साल के लिये राम वनवास में चले जाओ।

दशरथ जी बोले– अरे , ये क्या हो रहा है? जो कैकेयी राम की तारीफ करती थी कि भरत जैसा मेरा लाड़ला है वैसे ही रामजी उससे भी ज्यादा लाड़ले हैं। वो ही कैकेयी कहती है –चौदह साल के लिये वनवास भेज दो। क्या हो गया? चेत नही रहा, अचेत।

ये अचेत शब्द ने। सुबह मैं स्वाध्याय कर रहा था जो व्यक्ति नशा करते हैं, पान मसाले में कहते हैं चेत नही है। लिखा हुआ है कि– पान मसाला घातक बीमारी पैदा कर सकता है। फिर भी चमकीली, चमकीली लड़ियाँ लटक रही है। हाँ, और मुंडा में डाल रिया है।

पागल जैसे क्या कहें ? अचेत हो गये। हमें चेत नही रहा भगवान ने हमें किसके लिये भेजा है। आज, आप कहोगे महाराज हम तो बहुत चेत वाले है। हम तो आपकी ये व्यवहार की कथा सुनाते हैं। स्वभाव बदलाय, करुणा धर्म कराय। हाँ और सत्कर्म कराये।

सम्पादकीय

एक संत कवि की पंक्ति है – 'करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। यानी अभ्यास के द्वारा कोई भी अपने स्वरुप का परिवर्तन कर सकता है। अपात्र या अयोग्य व्यक्ति भी सुपात्र या सुयोग्य बन सकता है।यों तो हरके व्यक्ति में अनेक अच्छाइयां होती ही है। तथा कमियों की भी कमियाँ नही है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति अपनी अच्छाई का बखान तो करता रहता है। पर स्वयं की कमी को स्वीकार नहीं कर पाता । यह मानवीय कमजोरी है। जो अपनी कमजोरी या कमी को नहीं देख पाता उसमें सुधार की गुंजाइश क्षीण हो जाती है किसी भी व्यक्ति को स्वयं को सुधारना हो, समाजोपयोगी व मानवोचित बनाना हो तो सर्वप्रथम तो को उसे अपनी कमियों को पहचानना होगा। उसके बाद उन कमियों का विश्लेषण करके उन्हें त्यागने का मन बनाना होगा। फिर प्रांरभ होता है अभ्यास से अच्छाइयों का अंगीकरण। यह कार्य भले दुष्कर है पर अभ्यास से हर फल की प्राप्ति संभव है। अभ्यास वह क्रिया है जो परिमार्जन करती ही है।

कुछ काव्यमय

जो जागा है
वह मंजिल को पायेगा।
जिसने खुद को परखा है
वो देर–सवेर
सफलता पथ पर बढ़ जायेगा।
बस भावों में बसा लें
बढ़ने की भावना।
खुल जायेंगी सारी संभावना।।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अच्छे काम करते रहें

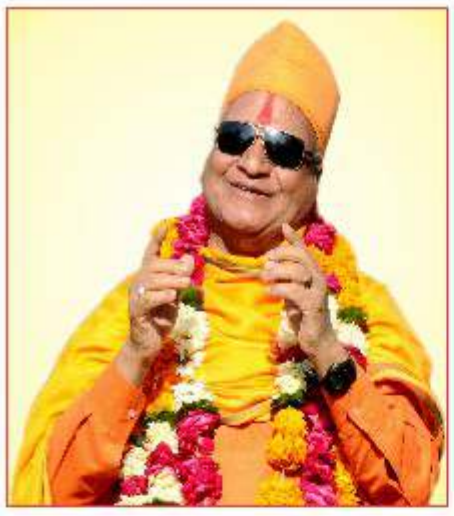

जाबालि ऋषि को एक बार क्रोध आ गया। एक कबूतर ने बीट कर दिया। जाबालि ऋषि ने गुस्सा किया। उनकी तपस्या भंग हो गई। कबूतर एक दम नीचे आकर के गिर पड़े और आकाशवाणी हुई थी। जाबालि ऋषि जा पतिव्रता स्त्री को अपना गुरु बना। और उन्होंने तभी एक घर के बाहर जाकर के आवाज दी।

जल्दी आओ मैं सिद्ध योगी जाबालि आया हूँ। अन्दर से गृह स्वामिनी ने कहा। मैं अपने पति को भोजन करवा रही हूँ। मैं अपने बच्चे को विद्या अध्ययन करवा रही हूँ। मैं अपने ससुर जी की सेवा कर रही हूँ। मैं अपनी सासू जी को दवाई दे रही हूँ। थोड़ी देर आप ठहरिये– बिराजिये। मैं आपका स्वागत भी करुंगी। उन्होंने कहा अरे ! तुझे नही मालूम मैं सिद्ध जाबालि आया हूँ। अन्दर से गृहस्वामिनी ने कहा। आप गुस्सा क्यों करते हो? मैं कोई कबूतरी नहीं हूँ जो आपके गुस्से से जलकर भस्म हो जाऊंगी। अभी थोड़ी देर रुकिये। ये कर्त्तव्य धर्म को अपने धर्म को अपनाईये। और हे! पति देवता आप अपनी पत्नी के साथ दगा मत कीजिए। चरित्र को खराब मत कीजिए।

कनक कनक ते सौ गुनी,
मादकता अधिकाय।
ये खाये बौरात जग,
वो पाये बौरात।।

धन के लोभ में इतने घमण्डी मत हो जाइये कि आलू बड़ा, मक्खन बड़ा, आप बड़ा मत होइये। आईये, भारत माता को प्रणाम कीजिए। आईये सत्य को प्रणाम कीजिए। मेरे पूज्य बापू जी ने 6 साल की उम्र में बताया ''बेटा अपने माथे को शान्त रखना।

–कैलाश 'मानव'

जो आया है वो जायेगा...

आप और हम सब जानते हैं भगवान बुद्ध को कैसे पता लगा था कि जीवन का सत्य क्या है? जीवन का सत्य है जन्म और मृत्यु। सबसे पहले बालपन, फिर जवानी और बुढ़ापा। ये जीवन तीन घंटे का पेपर है, हम बुढ़ापे में सोचते है पेपर कैसा किया हमने जब हमारे पास कुछ रहता नहीं। जिन्दगी का कड़वा सच बताने जा रहा हूँ मैं आपको। एक भिखारी था, वह न ठीक से खाता था, न पीता था। जिस वजह से उसका बूढा शरीर सूख कर काँटे की तरह हो गया। उसकी एक–एक हड्डी गिनी जा सकती थी। उसके आँखों की ज्योति चली गई, बेचारा रास्ते में बैठकर गिड़–गिड़ा कर भीख माँगा करता था। एक युवक उस रास्ते से रोज निकलता था। भिखारी को देखकर उसे लगता कि इसे इतनी तकलीफ में यह व्यक्ति भीख माँगता है। तो भगवान इसे उठा क्यों नहीं लेता। एक दिन उसे रहा न गया। वह भिखारी के पास गया और बोला– बाबा तुम्हारी हालत बहुत दयनीय है। तुम फिर भी जीना चाहते हो। तुम भीख माँगते हो, फिर ईश्वर से यह प्रार्थना क्यों नहीं करते कि वह तुम्हें अपने पास बुला लें। तुम बहुत तकलीफ में हो। भिखारी ने मुँह खोला– भईया जो तुम कह रहे हो वही बात मेरे मन में भी कई बार उठती है। मैं भगवान से बराबर प्रार्थना करता हूँ पर वो मेरी सुनता ही नहीं। शायद वो चाहता है कि मैं इस धरती पर रहूँ। जिससे दुनिया के लोग मुझे देखे और समझे की एक दिन मैं भी उन्ही की तरह था। लेकिन वह दिन भी आयेगा जब वो मेरी तरह हो जायेंगे। इसलिये किसी को घमण्ड नहीं करना चाहिये। लड़का भिखारी की ओर देखता रह गया। उसने जो कहा था उसमें कितनी बड़ी सच्चाई समायी हुई थी। जिन्दगी का एक कड़वा सच है जिसे मानने वाले लोग ही प्रभु की सीख को समझ पाते हैं। जो आया है वो जायेगा। किस लिये इतना धनसंग्रह करें? किस लिये इतना परिग्रह करें? अपरिग्रह कीजिये। ज्यादा अपने पास धन का संग्रह मत कीजिये क्योंकि जाना है बिना कुछ लिये दिये। इसलिये लेना है और देना है तो प्रेम, स्नेह और आत्मीयता लीजिये और दीजिये, उसी में आनन्द है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

एक तरफ यह सोच थी तो दूसरी तरफ टी.वी. पर आने का आकर्षण भी था। कैलाश के मन की मुराद भी यही थी। जो होगा देखा जायगा सोच कर उसने चैनल को हां कर दी तथा आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कर लीं। एक बार कार्यक्रम करने का तय हो गया तो कार्यक्रम तैयार करने के लिये टीम जुटाना तथा हर कार्यक्रम की एक पटकथा बनाने का भारी कार्य सिर पर आ गया।

कैलाश गुलाब बाग घूमने रोज जाता था। उन दिनों वहां चलने वाली बच्चों की रेल बन्द थी। इसके स्टेशन के बाहर का क्षेत्र उसे अपना कार्यक्रम शूट करने के लिए उपयुक्त जगह लगी। उसके पास शिक्षाप्रद, धार्मिक तथा प्रेरक–प्रसंगों की पुस्तकों की कमी नहीं थी। कल्याण के अंक भी उसने संग्रहित कर रखे थे। इन सबको पढ़ पढ़ कर कार्यक्रम में क्या बोलना है उसकी रूपरेखा तैयार की।

कैलाश के लिए यह कार्य एकदम अनूठा था। एक निश्चिन्तता यह थी कि मंच पर कार्यक्रम देते हुए सामने दर्शकों की भीड़ देखकर जो डर की अनुभूति होती है वैसा कोई डर इसमें नहीं था। यहां तो केमरा ही श्रोता था, दर्शक जो होने वाले थे वे टी. वी. के बंधक दर्शक होते हैं, उन्हें तो जो दिखाया जा रहा है वह देखना ही है, ज्यादा से ज्यादा वे चैनल बदल सकते हैं। इस एहसास के बाद कैलाश का आत्म विश्वास द्विगुणित हो गया।

केमरा टीम भी जुट गई थी। दूरदर्शन से जुड़े एक माथुर मिल गये थे। उन्हीं को यह दायित्व सौंप दिया। नीति कथाएं और प्रेरक प्रसंग इत्यादि कैलाश ने बचपन में बहुत पढ़े थे। सामग्री की कोई कमी नहीं थी बस केमरे के सामने उसे ढंग से दोहराना था। उसने अपने कार्यक्रम को नाम दिया–वाणी की सेवा। शूटिंग की शुरूआत गुलाब बाग के लव–कुश रेल स्टेडियम के बाहर से ही की। दरी बिछाकर पुस्तकें लेकर कैलाश बैठ गया। जिन्दगी भर उसने नीति वाक्यों के नाम पट्ट लगाये थे। उन्हें टी वी. हेतु दोहराने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

अंश - 198

समय की कमी का बहाना छोड़ें

अमरीका के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ चार्ल्स फेफर्मन रोज केवल एक घंटा गणित सीखने का नियम पालते थे और इस नियम पर अंत तक डटे रहकर उन्होंने गणित में महारत हासिल कर ली। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जब कॉलेज जाते थे, तो रास्ते में दुकानदार उन्हें देखकर अपनी घड़ियां ठीक करते थे।

वे जानते थे कि विद्यासागर समय से कभी एक मिनट भी आगे–पीछे नहीं चलते। नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया था क्योंकि वहां के सैनिक उनका सामना करने के लिए पांच मिनट देरी से आए थे और वही नेपोलियन वॉटर–लू के युद्ध में इसलिए बंदी बना लिए गए थे क्योंकि उनके सेनापति भी मात्र पांच मिनट देरी से आए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी दातुन करने से पूर्व शीशे पर श्रीभगवदगीता का एक श्लोक चिपका लिया करते थे और दातुन करते समय ही उसे याद कर लिया करते थे।

समय का सदुपयोग करते हुए उन्होंने गीता के कुल तेरह अध्यायों को कंठस्थ याद कर लिया था। यदि आप स्टूडेंट हैं, तो परीक्षा का यह समय महत्वपूर्ण रहने वाला है, प्रातः जल्दी उठकर दिन की सार्थक शुरूआत करें। मंजिल को हासिल करने वाले कभी देर तक सोया नहीं करते। वे आगे बढ़ते रहते हैं।